| नामांक | | | | Roll No. | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | |

No. of Questions — 9
No. of Printed Pages — 3

# SS—26–1— Raj. Sah. I

## उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2010

**वैकल्पिक वर्ग I** ( OPTIONAL GROUP I — HUMANITIES )

**राजस्थानी साहित्य — प्रथम पत्र**

**( RAJASTHANI SAHITYA — First Paper )**

**समय : 3 $\frac{1}{4}$ घण्टे**

**पूर्णांक : 60**

**परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :**

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें ।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं । प्रश्न संख्या **1** के तीनों भागों में आंतरिक विकल्प हैं ।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें ।
4. जिस प्रश्न के एक से अधिक समान अंक वाले भाग हैं, उन सभी भागों का हल एक साथ सतत् लिखें ।
5. लेखन में शुद्धता और वैज्ञानिक विवेचन को अधिक अंक दिये जायेंगे ।
6. वर्तनी, व्याकरण और सुलेख का अतिशय ध्यान रखिए तथा युक्तिसंगत उत्तर लिखिए ।
7. उत्तर हिन्दी और राजस्थानी उभय भाषाओं में अंगीकार्य होंगे ।
8. पूर्णांक और प्रश्नांक यथास्थान अंकित हैं ।
9. उत्तर हेतु निर्धारित शब्द सीमा —
   (i) प्र० सं० **2** से **5** तक — उत्तर लगभग **100** शब्द
   (ii) प्र० सं० **6, 7** — उत्तर लगभग **200** शब्द
   (iii) प्र० सं० **8** — स्वविवेक पर आधारित
   (iv) प्र० सं० **9** — निबंध — अधिकतम **300** शब्द ।

1. निम्नलिखित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) इण सुवै विचारीयौ — म्हारै धणी वसत अेक मंगावी छै । सो इण आंबां री गुठली अेक ले जावूं नै आंबो म्हारौ धणी अरोगै तो बुढ़ा सूं मोटियार हुवै । यूं विचार नै डाभ रा पानां सुं गुठली वींट नै गळै बांधी, लै नै आळै आयौ । $4\frac{1}{2}$

**अथवा**

अबै हर साल आंरो जलम दिन मनाइजै । देस रा मोटा-मोटा लोग, विद्वान नेता अठै भेळा हुवै, आं री जयजयकार बोलै अर आंरा गीत गांवता - गांवता कोनी धापै । स्वामीजी री मौन मूरत मुळकै अर जाणै कैवै — ''वाह री ! आदमी री जात'' ।

(ख) दुनिया सांच रौ डंको पीटै, पण सांच बोल्यां किसो पार पड़ै है ? कूड़ रा मन तो कूड़ ही साजै । जठै सांच बोल्यां माथा फूट जावै, ऊमर भर रो बैर बिस जावै, बठै कूड़ सूं राजी-राजी काम नीसरै । कूड़ इसो अमोघ सस्तर है जिको ओड़ी बगत में आडो आवै । $4\frac{1}{2}$

**अथवा**

तांबै रै कळसै माटी रै घड़ै नै कयो - घड़ा ! थारै में घाल्योड़ो पांणी ठंडो कियां रैवै अर म्हारै में घाल्योड़ो तातो कियां — हुज्यावै ? घड़ो बोल्यो — मैं पाणी नै म्हारै जीव-में जग्यां दूं हूं अर तू आंतरै राखै है ओ ही कारण है ।

(ग) सूरजड़ी फफक पड़ी । माधैनैं काठी झालती हुयी बोली — ''नहीं-नहीं, म्हारी मिट्टी, खराब क्यूं करै है । इसी हेठी नीं नांख । अबै हूं कठै ही नीं जावूंली । तीन टाबरा री मां बणनै रै पछै इणगी सूं उणगी अर उणगी सूं इणगी ..... नहीं-नहीं हूँ, थारै पगै पड़ हूं ..... इण सूं तो चोखौ तो ओइज हुवैलौ कै तूं मनै कठैईसूं बिस लाय'र दे दे । हूं राजी-राजी खाय नै सोय जावूंली । 4

**अथवा**

सराळा सुख असल में दुख ईज है । सुख घड़ी-पोर रा है । अजर-अमर है तो आ मिरत्यू ! ..... मौत । आ मिरत्यु ई अेक अमर सत्य है ! ..... इण पीड़ा रो अनुभव ई सांचो अनुभव है । आपां सगळा रमतिया हां । रमतिया बणावै जकौ ठा'नी कद तोड़ देवै ..... कियां तोड़ देवै आपां नीं जाणां ।

2. 'वाचा अवाचा छै' सयणी चारणी की व़ात रै इण कथन री व्याख्या करौ । $4\frac{1}{2}$

3. कहाणी रा मूल तत्वां रै आधार माथै 'गांव रा मास्टरजी' कहाणी री समीक्षा करौ । $4\frac{1}{2}$

4. पठित निबंध रै आधार माथै 'साहित्य रो प्रयोजन' स्पष्ट करौ । $4\frac{1}{2}$

5. 'मुहणोत नैणसी'रौ चरित्र-चित्रण करौ । $4\frac{1}{2}$

6. उपन्यास 'हूं गोरी किण पीव री' में किण सामाजिक समस्यावां नै उजागर करी है ? स्पष्ट करौ । 4

7. आधुनिक राजस्थानी गद्य री विधावां रौ सामान्य परिचय देवतां थकां अेक आलेख लिखो । 8

8. निम्नलिखित गद्यांश नै पढ़'र नीचे दिया सवालां रा उत्तर दिरावो :

राजस्थानी कवियां ईं पर्यावरण-सुधार सारूं पेड़ लगावण बावत पूरौ जोर दियो है । इण बात में सार भी है । पेड़-पौधा तो जलम देवणिया मां-बाप सूं ई सवाया । वे हर जीव नै सारी उमर पाळै ई पाळै । मां बाप तो बुढ़ापै में सेवा अर रोटी मांगै, पण पेड़ कदैई कीं कोनी मांगै । पेड़ा सूं आपणी जिनगाणी, अेक तरह सूं बंधियोड़ी । पेड़ा सूं ही जंगळ है अर जंगळ सूं ही मंगळ है ।

(i) इण गद्यांश रौ औपतो शीर्षक लिखौ । 1

(ii) पेड़ मां-बाप सूं किण तरै सवाया है । 2

(iii) इन अवतरण रौ सार अेक-तिहाई सबदां में लिखौ । 2

9. नीचै लिख्यां विषयां मायं सूं किणीं अेक विषय माथै राजस्थानी भाषा में निबन्ध लिखौ : 12

(i) म्हारा वाल्ही पौथी

(ii) दहेज प्रथा: अेक कलंक

(iii) राजस्थानी लोक-गीत

(iv) जल री समस्या अर समाधान ।